districts of Assam, which are most affected, as my hon. friend has mentioned, Warlparadbubri, in which you have organization, like the Islamic Liberation Army, South Assam, Kachar, Haplong, Karbianglong. A situation has come where, now, the political border of India and Bangladesh and the demographic border of India and Bangladesh are different. The political border is where it is, the geographic border. The demographic border extends up to 10 to 20 Kms. inside India, depending on the State you are in. Sir, I will blame the Central Government for this, because the situation on our eastern border in not being treated with the same degree of concern as in the case of the western border. It has been our experience that the western border; Jammu and Kashmir, etc. have their own problems. They are very major problems. I do not deny that. But the remedy to that has generally been to lift the Border Security Force from the East and bring it to the West. Sir, the result of this is that the entire Eastern Border -- West Bengal, Assam, Tripura, Manipur - is very thinly manned. It has become a totally porous border, intelligence is lacking there, and wire fencing has come up in patches. So, in addition to the various measures which have been proposed by Dr. Sarma, the answer to this is to find a special method of identifying these illegal immigrants who have come from across the border, who have settled down, courtesy the various political parties which were in power and which had given these illegal certificates. The Centre must now reinforce the border control measures along the entire Indo-Bangladesh border, specifically around the areas, namely, Assam, Tripura and West Bengal, about which Dr. Sarma has also mentioned. The Centre must strengthen its intelligence coverage of these areas. Sir, the Centre must now devote its attention equally to the eastern border, as it is giving to the western border. Thank you, Mr. Vice-Chairman.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR) : May I request Dr. Sarma, Mr. Chowdhury and the other concerned hon. Members to get together and make their factual observations about the States which they have mentioned? Based on this, you make your suggestions as to how to curb this, because the Supreme Court has also expressed its displeasure over it. Will you kindly do that by sitting together and making a very detailed note for the benefit of the Government?

Attack on cattle protectionists resulting in murder of citizens in Gujarat

श्री ललित भाई मेहता (गुजरात) : उपसभाध्यक्ष जी, गुजरात में घटी एक

निन्दनीय घटना और इसके साथ जुड़े हुए एक महत्वपूर्ण और गंभीर विषय की ओर मैं सदन का ध्यान आकर्षित करने के लिए खड़ा हुआ हूं । महोदय, देश की पशु सम्पदा को दांव पर लगा दिया गया है । मांसाहार और मांस के निर्यात का सिलसिला बढ़ता चला जा रहा है। वैश्वीकरण के नाम पर राष्ट्रीयता की उपेक्षा हो रही है । पशु जगत के साथ नृशंस, क्रूर, अमानवीय और राक्षसी खिलवाड़ चल रहा है । वैध और अवैध कत्ल-कारखाने बढ़ते जा रहे हैं और पशुओं की निर्मम हत्याओं के हत्यारे दिन-दहाड़े जीवदया प्रेमी, पशुधन के रक्षक, गौप्रेमी नागरिकों को मौत के घाट उतारते जा रहे हैं ।

महोदय, गुजरात के बनासकांठा जिले के दीसा नगर में 2 अप्रैल को रशीद मियां और उसके साथ पांच लोगों ने एक 27 वर्षीय नवयुवक प्रकाश शाह पर घातक हमला करके दिन-दहाड़े उसकी हत्या कर दी । प्रकाश शाह कत्लखाने जा रहे पशुओं को बचा रहा था । इस छोटे से नगर में 25 कत्लखाने अवैध रूप से चल रहे हैं ।

उपसभाध्यक्ष जी, अभी अभी दो महीने पहले गुजरात सरकार ने एक गौवंश वचावक अभियान चलाया था। गुजरात में वहां के विभिन्न विभागों को साथ जोड़कर पशु बचाने का एक ड्राइव चलाया गया। इस ड्राइव में 8856 पशुओं को पकड़ा गया और कत्लखानों पर जाने से रोका गया। पशुओं का मांस परोसनेवाले 64 होटलों को भी नोटिस दिया गया । उपसभाध्यक्ष जी, गुजरात में गौ वंश की हत्या पर प्रतिबंध लागू है । गौ वंश की हत्या करने वाले को अब "पासा" में बंद करने का विधेयक विधान सभा में सर्वसम्मति से पारित हुआ है। गुजरात के कसाइयों को, गुजरात के पशु धन के हत्यारों को यह ठीक नहीं लगता है। कोई इनको रोके, यह बात इनको जचती नहीं है। 23 मार्च, 1985 को किशन लोढ़ा और हरकिशन लोढ़ा की पशु रक्षा करते हुए गुजरात में हत्या कर दी गई थी। उस समय से जीव दया प्रेमी नागरिकों पर हत्याओं का सिलसिला चल रहा है। प्रकाश शाह के बड़े भाई पर भी 1992 में हमला हुआ था, वह उस वक्त बाल-बाल बच गये थे। 27 मार्च, 1993 को श्रीमती गीताबहन रांमिया पर भी हमला हुआ था। उनकी निर्दयता से हत्या कर दी गई। गीताबहन पशु रक्षा और जीव दया के क्षेत्र में पिछले सात सालों से काम कर रही थीं । 1,56,135 पशुओं को उन्होंने बचाया। गीताबहन के पति बचुभाई रांमिया पर 1992, 1995, 1996, 1997, 1999 में लगातार सात साल हमले होते रहे। 1996 में जुलाई के महीने में इसी डिसा गांव के भरतभाई कोठारी पर हमला हुआ था । 23 हमलाखोर लोग थे जो आज भी खुले आम अवैध पशु धन के कत्ल के धंधे में लगे हुए हैं लेकिन आज तक उनको पकड़ा नहीं गया है। 12-8-1998 को हरिद्वार नामक गौसेवक पर हमला किया गया था। 24 मार्च, 1999 को विश्व हिन्दू परिषद के अहमदाबाद के कार्यकर्ता हरिभाई सोलंकी को मौत के घाट उतार दिया गया क्योंकि वह कसाइयों के इस

अवैध धंधे का चट्टान की तरह से विरोध कर रहा था, पशु धन को बचा रहा था। इसी सदन में यह मामला दो महीने पहले आया था कि राजस्थान में पशुओं को ले जाने वाले लोगों से शिव सेना के एक कार्यकर्ता ने डट कर मुकाबला किया तो उसको जिन्दा तलवार से काट दिया गया। भारत का पशु धन भारत के जनजीवन से जुड़ा हुआ है। हर तरह से उसको हम से अलग किया जा रहा है। व्यक्तिगत स्वार्थ की पूर्ति के लिए पशु धन को लूटा जा रहा है। अहिंसा, सत्य, करुणा, दया और मानवता का संदेश देने वाले इस भारतवर्ष में हिंसा, क्रूरता, हत्या और हैवानियत का बोलबाला इन लोगों के कारण है। पशु आर्थिक दृष्टि से भी बहुत उपयोगी हैं, लाभदायी हैं। यह सिद्ध हुआ है कि कंपोस्ट खाद, बायो गैस और बिजली का उत्पादन करें तो एक पशु हमें 22 हजार रुपये की शुद्ध आमदनी देने की क्षमता रखता है। फिर भी अवैध कत्लखानों में इनको भेजने की साजिश चल रही है। कत्ल किये जाने के कारण पशुओं की संख्या भी घटती जा रही है। 1951 में एक हजार नागरिकों के पीछे पशुओं की संख्या 430 थी और यह औसत अब घट कर अगले दस साल में सिर्फ 20 रह जाएगी। यह अनुमान लगाया जा रहा है। क्या यह चिंता की बात नहीं है? दूध के उत्पादन में दुनिया में पहला नम्बर होने का हम गौरव लेते हैं। लेकिन मैं सदन को यह भी बताना चाहता हूं कि जहां 1952 में भारत के प्रत्येक नागरिक को 185 ग्राम दूध मिलता था, आज पांच करोड़ टन के उत्पादन के बावजूद भी प्रति व्यक्ति 16 ग्राम दूध मिल रहा है । सब को पहले जैसा दूध उपलब्ध करें, इसके लिए पशु पालन को बढ़ावा मिले, क्या अवैध हत्याओं को रोकना नहीं चाहिये। देश की वन संपदा को बचाने के लिए, देश की जमीन की उत्पादकता को कायम रखने के लिए, गांवों को आबाद करने के लिए, ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था को मजबूत करने के लिए, पीने के पानी की समस्या को सुलझाने के लिए, पशुओं के कत्ल को रोका जाना चाहिये और कसाइयों के खिलाफ कड़ा और कठोर कदम उठाना चाहिये ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): Mr. Mehta, please conclude. You have already taken five minutes.

SHRI LALITBHAI MEHTA: Within half a minute, Sir. उपसभाध्यक्ष महोदय, हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री जी जिन्होंने "स्वदेश" नामक एक साप्ताहिक में थोड़े वर्ष पहले जो एडिटोरियल लिखा, उसको मैं उद्धृत करना चाहूंगा -

> "गौवध पर रोक लगाने में सरकार के सम्मुख जो कठिनाइयां हैं उनमें से एक भी ऐसी नहीं है जिसके कारण गौवध की छूट दी जाती रहे और गौवध का अबाध निर्मूलन चलता रहे । गौरक्षा का प्रश्न मुख्यतः सांस्कृतिक है । "

हमारी संपत्ति में निर्यात व्यापार का उद्देश्य देश की समृद्धि बढ़ाना ही है । ऐसा निर्यात किस काम का जिससे कि देश का स्वास्थ्य बिगड़े और सांस्कृतिक ह्रास हो। विदेशों में गाय का मांस निर्यात कर हम वहां के बने मक्खन और दूध का आयात करें इससे अधिक शोचनीय बात क्या हो सकती है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं एक और कमेटी की जो सिफारिश है उस पर ध्यान देकर अपना वक्तव्य समाप्त कर दूंगा। कैटल प्रेजरवेशन एण्ड डेवलपमेंट कमेटी 19 नवम्बर, 1947 में बनी थी। उस कमेटी ने जो रिपोर्ट दी उसमें यह बात बतायी गयी है -

> "This Committee is of opinion that slaughter of cattle is not desirable in India under any circumstances whatsoever, and that its prohibition shall be enforced by law. The prosperity of India, to a large extent, depends on her cattle and the soul of the country can feel satisfied only if cattle slaughter is banned completely."

इसको ध्यान में रखते हुए भारत की सरकार राज्यों से आग्रह करके ऐसे कठोर कदम उठाए जिससे कि अवैध कत्लखाने बंद हों और वैध कत्लखाने भी क्रमशः बंद कर दिए जाएं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): Shri Vayalar Ravi.

SHRI ANANTRAY DEVSHANKER DAVE (Gujarat): Sir, my name is there.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): Yes, but you are from the same party.

SHRI ANANTRAY DEVSHANKER DAVE: Sir, I will associate with only two or three sentences and will finish.

हमारे माननीय सदस्य ने जो यहां पर कहा मैं सम्पूर्ण उससे अपने को सम्बद्ध करता हूं। आज गुजरात में, राजस्थान में तथा कई और जगहों पर पशुओं के बचाव के लिए जो आर्गनाइजेशंस काम कर रहे हैं उनके कार्यकर्ता मारे जा रहे हैं। दिन प्रति दिन गुजरात में ऐसी बहुत सी घटनाएं घटी हैं। उसके लिए जो कुछ इलाज करना चाहिए उसके लिए सरकार को कदम उठाने पड़ेंगे। यह बात गुजरात में अति महत्व की इसी लिए है कि आज के दिनों में वहां सूखा चल रहा है - जहां यह घटना घटी है बनासकांठा जिले

में। नार्थ गुजरात के बनासकांठा, सौराष्ट्र एवं कच्छ में भी अभी पीने के पानी की तीव्र समस्या है। पशुओं के लिए चारा नहीं है। आज इसी लिए इस घटना का अति महत्व हो गया है कि आम किसान या जो गरीब किसान हैं जिनके पास 2-3 बैल या कुछ गऊएं हैं उनके निर्वाह के लिए उनके पास पैसा नहीं है। बारिश न होने की वजह से वे खुद सड़क खोदने के लिए लेबर करने जाते हैं। वे अपने पशुओं का बचाव नहीं कर सकते हैं। इसलिए वैसे ही वे अपने पशुओं को भगवान के भरोसे छोड़ देते हैं। छोड़ने के बाद जहां पर ऐसे अवैध बूचड़खाने चल रहे हैं वे लोग ऐसे पशुओं को ले जाते हैं। लेकिन वहां ऐसे जो संगठन हैं, जो लोग हैं वे उनको रोक कर कहते हैं कि आप यह मत करो, यह धंधा आपको नहीं करना है। उनको रोकते हैं। उनके ध्यान में ये लोग हैं और ये लोग हमारा सामना करते हैं इसलिए उनको मार देते हैं। गंभीर समस्या यह है। यह सिलसिला गुजरात में पहली बार नहीं घटा है। तीसरी, चौथी बार ऐसी घटना घटी है। जैसी परिस्थिति आज गुजरात में चल रही है इसलिए मैं कहूंगा कि यहां से कुछ न कुछ जरूर राज्य सरकार को भी मेसेज जाए। कुछ लोग पकड़े भी गए हैं। मैं ऐसा नहीं कहता हूं कि नहीं पकड़े गए हैं। कुछ लोग पकड़े भी गए हैं। ऐसे ही लोगों के सामने कड़ाई से काम लें ऐसा मेरा अनुरोध है और मैं समाप्त करता हूं।

SHRI VAYALAR RAVI (Kerala): Sir, I have no intention of hurting the sentiments of the people who worship the cow. I believe cow slaughter is something which is against a faith. I know the Gujral Government had passed a law prohibiting the cow slaughter. I know it is banned here. The Prime Minister had written an article on it and I entirely agree with him on that. It is not difficult to make a law banning the cow slaughter, but it is a question of protecting the continued life of the cattle. My friend has said there is no water, there is no fodder and they are suffering on account of starvation. You make them orphan and throw them on the street for others to butcher them. There is already a law banning their slaughter. Let the Government implement that law. When certain people are determined to take the law into their own hands clashes occur. What I am requesting the hon. Members from that side is, if a Bill is passed to this effect unanimously, I have no quarrel with that, we have no quarrel with that. The only point is that if any inciden happens certain people make it a point to go to the butcher's shop. Some kind of such things are happening there because cow slaughter or cattle slaughter has been banned. But there are people who are eating meat. The goats are being slaughtered. They have been selling the meat. Certain people made it a point of extortion. This kind of extortion

comes because the police are not acting to prevent the cow slaughter. What I am suggesting is the Government may implement the law. The Government agencies may implement the law rather than certain people themselves taking the law into their hands and creating this kind of clashes and murders. The police have arrested some people and some cases are going on. My only submission is that the Government should enact a law. The Government should implement the law, rather than certain people themselves taking the law into their hands, and creating a lot of disturbance in the State, in the name of protecting the cattle. I hope the Government would take note of these sentiments and do something.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): Are you associating?

SHRI VAYALAR RAVI : Yes.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): There is one request.

SHRI LEKHRAJ BACHANI (Gujarat): Mr. Vice-Chairman, Sir, I belong to Banas Kantha district. I want to say a few words.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): I have to close the discussion. Normally, on each Special Mention, only one Member from a party is allowed. But two Members from your party have already spoken. We have already exceeded the time. There is only one last Special Mention left out. Can we take it up?

SOME HON. MEMBERS: Yes

SHRI LEKHRAJ BACHANI: Mr. Vice-Chairman, Sir, I associate myself with the Special Mention made by Shri Anantray Devshanker Dave. I belong to Banas Kantha district.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): Your association has been noted.

Mr. Pradhan, your name is the last one in the Special Mentions list. You have also given the name of Mr. Sanjay Nirupam. But I will not permit him. ...*(Interruptions)*... Please sit down. Please sit down.

Atrocities on women committed by Police in the country

श्री सतीश प्रधान (महाराष्ट्र) : उपसभाध्यक्ष महोदय, यह मामला बहुत गंभीर है और इस विषय पर भारत सरकार को तुरन्त कदम उठाने की आवश्यकता है । वैसे इस